❋ 1 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] बाबा सभी बच्चों को शान्ति और सुख का वरदान देते हैं।

2] बाप कहते हैं ऐसे सतगुरू की निन्दा कराने वाले लक्ष्मी-नारायण बनने की ठौर पा न सकें इसलिए पूरा पुरूषार्थ करते रहो, इससे तुम बहुत ही शीतल बन जायेंगे। पाँच विकारों की बातें सब निकल जायेंगी। बाप से बहुत ताकत मिल जायेगी। काम-काज भी करना है। बाप ऐसे नहीं कहते कि कर्म न करो। वहाँ तुम्हारे कर्म, अकर्म हो जायेंगे। कलियुग में जो कर्म होते हैं, वह विकर्म हो जाते हैं। अभी संगमयुग पर तुमको सीखना होता है। वहाँ सीखने की बात नहीं। यहाँ की शिक्षा ही वहाँ साथ चलेगी।

3] बाप डायरेक्शन देते हैं– ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए, इससे तुम बाप की निन्दा कराते हो। शान्ति में कोई निन्दा वा विकर्म होता नहीं। अशान्त न खुद हो, न औरों को करो। किसको दुःख देने से आत्मा नाराज़ होती है।

4] सबको कल्प-कल्प हम आकर शान्ति का रास्ता बताता हूँ। वर देने की बात नहीं है। ऐसे नहीं कहते धनवान भव, आयुष्वान भव। नहीं। सतयुग में तुम ऐसे थे परन्तु आशीर्वाद नहीं देते हैं। कृपा वा आशीर्वाद नहीं माँगनी है। बाप, बाप भी है, टीचर भी है– यही बात याद करनी है। ओहो! शिवबाबा बाप भी है, टीचर भी है, ज्ञान का सागर भी है। बाप ही बैठ अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं, जिससे तुम चक्रवर्ती महाराजा बन जाते हो।

5] कम मार्क्स से पास होने वाले को चन्द्रवंशी कहा जाता है, इसलिए राम को बाण आदि दे दिय है। हिंसा तो त्रेता में भी होती नहीं। गायन भी है राम राजा, राम प्रजा..... परन्तु यह क्षत्रियपन की निशानी दे दी है तो मनुष्य मूँझते हैं। यह हथियार आदि होते नहीं हैं। शक्तियों के लिए कटारी आदि दिखाते हैं। समझते कुछ भी नहीं है।

❋ योग-

1] तब बाप कहते हैं– बच्चे, मंज़िल बहुत ऊंची है। काम करते हुए बाप को याद करना– यह है ऊंच ते ऊंच मंज़िल। इसमें प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए।

2] जितना तुम बाप को याद करेंगे उतना शान्त रहेंगे।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– देही-अभिमानी बनो तो शीतल हो जायेंगे, विकारों की बाँस निकल जायेगी, अन्तर्मुखी हो जायेंगी, फूल बन जायेंगे।

2] बाबा कहते– बच्चे, तुम शान्ति में रहने का अभ्यास करो। कोई उल्टा-सुल्टा बोलते हैं तो तुम जवाब न दो। तुम्हें शान्त रहना है। फालतू झरमुई, झगमुई की बातें नहीं करती है। किसी को भी दुःख नहीं देना है। मुख में शान्ति का मुहलरा डाल दो तो यह दोनों वरदान स्वरूप में आ जायेंगे।

3] बाप बच्चों को समझाते हैं– बाहरमुखता अच्छी नहीं है। अन्तर्मुखी भव। वह भी समय आयेगा जबकि तुम बच्चे अन्तर्मुख हो जायेंगे। सिवाए बाप के और कुछ याद नहीं आयेगा।

4] तुम बच्चों को तो रहना है बिल्कुल शान्त। तुम शान्ति का वर्सा ले रहे हो ना।

5] आँखें बड़ा धोखा देती हैं। इन आँखों को कब्जे में (अधिकार में) रखना है। देखा गया भाई-बहन में भी दृष्टि ठीक नहीं रहती है तो अब समझाया जाता है भाई-भाई समझो।

6] लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और बच्चे कहते हैं हम जो भी करते हैं, जहाँ भी जाते हैं बाप साथ ही है। कहा जाता है करनकरावनहार, तो करनहार और करावनहार कम्बाइन्ड हो गया। इस स्मृति में रहकर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी बन जाते हैं।

7] स्वयं को इस पुरानी दुनिया में 'गेस्ट' समझकर रहो तो पुराने संस्कारों और संकल्पों को 'गेट आउट' कर सकेंगे।

❋ सेवा-

1] – – –